नास्तिक कौन? और सच्चा आस्तिक कौन?

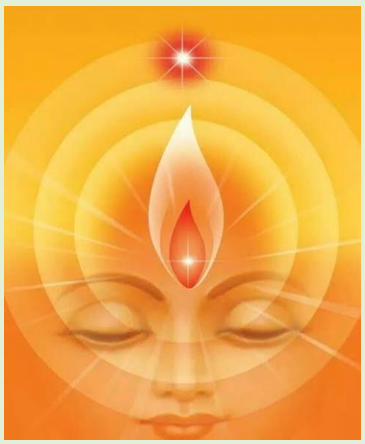

क्या परमात्मा है? अगर माने कि परमात्मा है, तो परमात्मा कौन है? कैसा है? कहाँ है? हमारा उसके साथ क्या संबंध है? आदि प्रश्न विचार करने योग्य है। क्योंकि आज दुनिया में ईश्वर के बारे में कई मान्यताएं एवं विचारधाराएं प्रवर्तमान हैं और उनमें से कुछ तो बहुत ही परस्पर विरोधी मान्यताएं हैं। जैसे कि नास्तिकवाद-आस्तिकवाद; एकेश्वरवाद-अनेकेश्वरवाद; द्वैतवाद-अद्वैतवाद; अवतारवाद-बिनअवतारवाद, सगुण साकारवाद - निर्गुण निराकारवाद आदि आदि। इन परस्पर विरोधी मान्यताओं में सबसे महत्वपूर्ण है नास्तिकवाद और आस्तिकवाद। सामान्य तौर पर जो व्यक्ति चेतना (आत्मा) के अस्तित्व का और परमात्मा के अस्तित्व का स्वीकार ही नहीं करता है और मानता है कि परमात्मा या जीवात्मा जैसी कोई हस्ती का अस्तित्व ही नहीं है, ईश्वर केवल मानव मन की उपज है, हम निश्चित ही उसे नास्तिक कहेंगे। दूसरी ओर, जो व्यक्ति ईश्वर के अस्तित्व का स्वीकार करता है और अपनी आस्था के अनुसार किसी भी रूप में ईश्वर को याद करता है, उसे आमतौर पर आस्तिक माना जाता है, चाहे उसे ईश्वर का सच्चा परिचय हो या न हो।

आज भी, ये दोनो वाद टिके हुए हैं क्योंकि नास्तिक अभी तक कोई तार्किक या वैज्ञानिक प्रमाण नहीं दे पाए हैं कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। उसी तरह आस्तिक भी कोई सटीक तार्किक या वैज्ञानिक प्रमाण नास्तिक को नहीं दे पाए हैं कि यह ईश्वर है मिल लो इसको। भले ही नास्तिक ईश्वर को स्वीकार नहीं करते और स्वयं को नास्तिक कहते हैं। लेकिन जाने-अनजाने में कभी-कभी उनके द्वारा ईश्वर का स्वीकार हो ही जाता हैं। इसको लेकर एक बात प्रचलित है। एक बार नास्तिकों के एक संगठन ने एक विशेष सभा का आयोजन किया। सभा की चर्चा का एजेंडा था कि एसे सटीक मुद्दे निकाले जाए ताकि हम यह साबित कर सकें कि ईश्वर जैसी कोई हस्ती नहीं है। बहुत चर्चा के बाद, सभी ने कुछ बहुत अच्छी बाते ढूढ निकाली। और अंत में बैठक के मॉडरेटर ने सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हुए कहा "Thank God, today we could prove that there is no God in this universe" दूसरे शब्दों में, हम ईश्वर को धन्यवाद देते हैं कि आज हम यह साबित कर सकते हैं कि ईश्वर जैसी कोई हस्ती नहीं है।

आइए अब हम आस्तिकवादीयों की ओर मुड़ें। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, जो लोग ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं और उन्हें किसी भी रूप में आस्था और श्रद्धा से याद करते हैं उन्हें आमतौर पर आस्तिक माना जाता है। भले उसको ईश्वर का सत्य परिचय हो या न हो। जो ईश्वर के अस्तित्व का स्वीकार ही नहीं करता उसे तो नास्तिक कहेंगे ही, लेकिन जो ईश्वर के अस्तित्व को किसी भी रूप में स्वीकार करता हैं, साथ ही उसे अपनी मान्यता या श्रद्धा के साथ उसे याद करता है या उसकी पूजा करता है, क्या उसे हम सच्चा आस्तिक कह सकते हैं? इनमें से कुछ की आस्था का रूप अंधविश्वास भी हो सकता है। यदि हम विवेक से सोचें तो हम उसे भल आस्तिक कहते हैं लेकिन हम उसे सच्चा आस्तिक कैसे कह सकते हैं? जो ईश्वर में विश्वास करता है, लेकिन जिसे उसका सत्य परिचय ही नहीं है उसे सच्चा आस्तिक कैसे कह सकते है?

इस संदर्भ में सोचें तो हम सच्चा आस्तिक उसे ही कह सकते हैं:

(1) जिसको ईश्वर का सत्य परिचय है| वह कौन है? वह कैसा है? वह कहाँ है? इस विश्व नाटक में उनकी क्या भूमिका है? किस रीत से है? कब है? क्यों है? जिनके पास यह प्रश्नो के स्पष्ट उत्तर हैं।

(2) इसके अलावा, वह यह भी जानता है कि मैं कौन हूँ। मैं कैसा हूँ? मैं कहाँ से आया हूँ और मुझे कहाँ जाना है? इस विश्व नाटक में मेरा जन्म जन्मान्तर का क्या पार्ट है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? इत्यादि।

(3) इसके अतिरिक्त वह यह भी जानता है कि पुरुष, प्रकृति और परमात्मा के बीच खेले जा रहे इस विश्व नाटक का आदि, मध्य और अंत क्या है? और यह नाटक कौन से मूलभूत सिद्धांतों पर चल रहा है?

(4) जो सत्य एकेश्वर के साथ निस्वार्थ प्रेम सम्बन्ध से जुड़ा हुआ है और परमानांद एवं परमशांति का अनुभव कर रहा है। ईश्वर की श्रीमत पर चल ईश्वर से अनेक उपलब्धियां प्राप्त कर रहा है।

उपरोक्त संदर्भ में दुनिया में अपने को आस्तिक कहेलानेवाले करोडो क्या सही मायने में आस्तिक है? भल फिर वह ईश्वर में आस्था और श्रध्दा रखकर उसकी कई तरह से पूजा करते हो; यज्ञ, जप, तप करते हो। आंशिक रुपे से भल हम अपने को आस्तिक कहते है परन्तु क्या मै सच्चा आस्तिक हूँ। वह हमें स्वयं को पूछना चाहिए|

चार युग के सृष्टिचक्र के संदर्भ में देखे तो द्वापर-कलयुग के हमारे जन्म दौरान हम सच्चे आस्तिक न बन सके लेकिन आज का समय हमारे लिए संपूर्ण सच्चे आस्तिक बनने का सुनहरा अवसर है| क्योंकि इस सृष्टिचक्र में कलयुग के बाद श्रेष्ठ सतयुग आता है, अर्थात् कलयुग के विनाश के बाद सतयुग की स्थापना होती है| यह महान परिवर्तन लाना किसी भी मनुष्य के लिए संभव नहीं है लेकिन इस महान परिवर्तन का कार्य स्वयं सर्वशक्तिमान परमेश्वर द्वारा ही संपन्न किया जा सकता है। हम इस संक्रमण के समय को यानि कलियुग के अंत और सतयुग की शुरुआत के बीच के यह परिवर्तन के समय को संगमयुग कह सकते है।

इस समय, सभी धर्मों के पिता, जगत नियंता, ज्योतिबिंदु स्वरूप परमात्मा शिव स्वयं अपने वचन अनुसार पृथ्वी पर ब्रह्मा के तन में अवतरण करते हैं और समग्र विश्व की आत्माओं को स्वयं का स्पष्ट परिचय देते है। साथ ही हम मानव आत्माओं का भी परिचय देते है। वह एक सच्चे आस्तिक होने के बारे में ऊपर बताए गए कुछ सवालों के स्पष्ट और सटीक उत्तर भी दे रहे हैं। इस विश्वनाटक का आदि, मध्य, अंत क्या है? यह किन सिद्धांतों पर चल रहा है? पूरे ब्रह्मांड की भूगोल क्या है? इस सृष्टिनाटक में मेरे कितने और कैसे जन्म हैं? इन सभी प्रश्नों के उत्तर सर्वज्ञ ईश्वर द्वारा दिये जा रहे है।

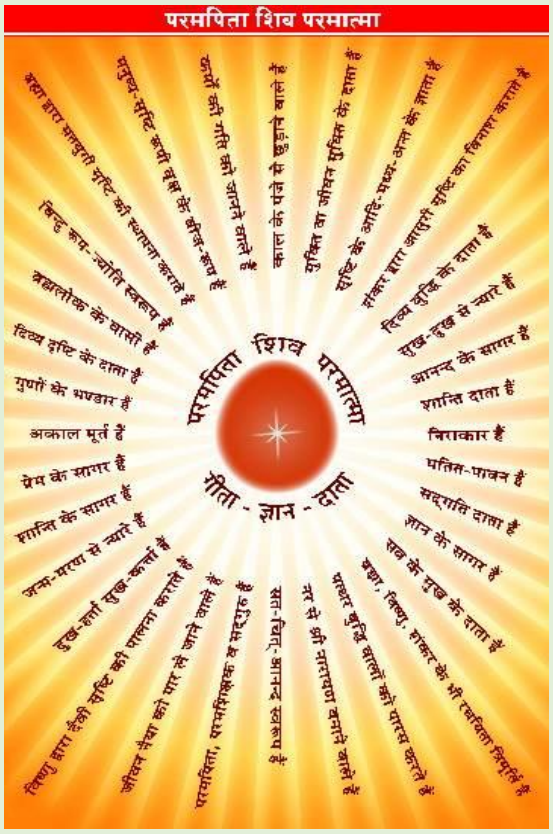

यही वह समय है जब हम परमेश्वर को पहचान कर, सही अर्थों में उसे जान कर, उसकी श्रीमत पर चलते हैं और सच्चे आस्तिक बनते हैं।

आइए हम एक सच्चे आस्तिक बनकर अपने जीवन को दिव्य बनाएं और साथ ही ईश्वर के साथ अपने सभी संबंधों को सार्थक रूप से अनुभव करें। साथ ही आने वाले सतयुग में अपने दैवी स्वरूप के पार्ट को निश्चित करें।

------ 00000 ------

ब्रह्माकुमार प्रफुल्लचंद्र

सान डिएगो, यु एस ए

(मो) 9825892710